# प्रारंभिक - मिरज

पूर्णांक - ५०

क्रियात्मक - ४०

शास्त्र - १०

## क्रियात्मक

१. तीनताल का परिचय |
२. तीनताल में ततकार, बराबर, दुगुन, चौगुन तिहाई सहित |
३. तीनताल में ६ सादे तोड़े, २ चक्करदार तोड़े, २ तिहाई |
४. तीनताल के ठेके की ताल लगाना |
५. तीनताल के गिनती से ठा: , दुगुन, चौगुन, हाथ से ताल लगाना |
६. सभी रचनाओं की पढंत आवश्यक |

## मौखिक शास्त्र

१. तीनताल का परिचय |
२. कत्थक नृत्य का परिचय (पाँच वाक्यों में)
३. खुद का, संस्था का और गुरु का परिचय (पाँच वाक्यों में)
४. परिभाषाएं - लय, विलंबित लय, मध्य लय, द्रुतलय, मात्रा,सम,ताली, खाली, विभाग और तिहाई |

Nritya Bharati - Jamnagar

## प्रारंभिक - प्रयाग

पूर्णांक - १००
क्रियात्मक - ७०
मौखिक - ३०

## क्रियात्मक

१. तीनताल में एक थाट, एक सलामी तथा एक तोड़ा |
२. दादरा और कहेरवा तालों में एक एक लोक नृत्य |
३. तीन ताल में दो ततकार, हाथ से ताली देकर ठा: व दुगुन में बोलना |
४. दादरा, कहेरवा एवं तीनताल को हाथ से ताली देकर ठा: तथा दुगुन में बोलना

## मौखिक शास्त्र

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान : ततकार, सलामी, थाट, तोड़ा, ताली, खली, सम, मात्रा, विभाग व आवर्तन |
२. किसी एक प्रसिद्ध नृत्यकार का जीवन परिचय |

Nritya Bharati - Jamnagar

# प्रारंभिक : उत्तर

## १. तीन ताल का परिचय :

| | |
|---|---|
| मात्रा - १६ | प्रत्येक विभाग में ४-४ मात्राएँ |
| विभाग - ४ | ताली की मात्राएँ - १, ५, १३ |
| ताली - ३ | खाली की मात्रा - ९ |

## २. कत्थक नृत्य का परिचय

कत्थक नृत्य भारत का प्राचीन शास्त्रीय नृत्य है | यह उत्तर भारत का नृत्य है | इस नृत्य शैली में तबला व हारमोनियम वाद्य मुख्या रूप से बजाये जाते है |

## ३. खुद का , संस्था का व गुरु का परिचय |

मेरी संस्था का नाम नृत्य भारती है | जिसकी स्थापना स्व. एस. एस. भट्ट्नागर सर ने २१ नवम्बर सन १९६० में की थी | मेरी गुरु का नाम श्रीमती सिमरन भट्ट्नागर है | जिन्होंने कत्थक नृत्य में एम्. ए. व पी.एचडी की डिग्री इंदिरा कला संगीत विश्व विद्यालय से प्राप्त की है |

## ४. सात नृत्य शैलियो के नाम व उनके प्रान्त

| शास्त्रीय नृत्य शैली | प्रान्त के नाम |
|---|---|
| भरत नाट्यम | तमिलनाडु |
| कथाकल्ली | केरल |
| कत्थक | उत्तरभारत |
| मणिपुरी | मणिपुर |
| कुचिपुड़ी | आंध्रप्रदेश |
| ओडिसी | ओड़िसा |
| मोहिनीअट्टम | केरल |

## ५. कत्थक नृत्य के तीन घरानों के नाम

कत्थक नृत्य के तीन घरानों के नाम

१) लखनऊ घराना, २)जयपुर घराना और ३) बनारस घराना

Nritya Bharati - Jamnagar

## ६. किसी एक प्रसिद्ध नृत्यकार का जीवन परिचय

- पंडित दुर्गाप्रसाद :

पंडित दुर्गाप्रसाद जी कत्थक नृत्य के जयपुर घराने से सम्बन्ध रखते है | आप का जन्म ३ मार्च १९३३ में हुआ था | आप तीनो घरानों का सामान सम्मान करते थे | आप तबला वादन के भी ज्ञाता (जानकार) थे

## ७. ग्रिवाभेद के ४ प्रकार

ग्रीवा यानि गर्दन का हमारे क्रिया-कलापों (रोज के कार्य) व अंग संचालन (बॉडी मूवमेंट) में विशेष स्थान है| बिना गर्दन घुमाये न तो हम ऊपर देख सकते है और न ही बगल में |

'अभिनय दर्पण' में आचार्य नंदिकेश्वर ने ग्रीवा संचालन के चार प्रकार बतलाये है | जिनके नाम है १) सुंदरी ग्रीवा २) तिरश्चीना ग्रीवा ३) परिवर्ती ग्रीवा ४) प्रकम्पिता ग्रीवा

१. सुंदरी ग्रीवा : साधरण रूप से गर्दन चलने को सुंदरी ग्रीवा कहेते है |

   प्रयोग : इसका प्रयोग पूर्ण रूप बताने में , वर्णन करने में, प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति देने में किया जाता है |

२. तिरश्चीना ग्रीवा : दाहिने (राईट) तथा बाये (लेफ्ट) व ऊपर कइ और साप की तरह चलती हुई गर्दन को तिरश्चीना ग्रीवा कहेते है |

   प्रयोग : इसका प्रयोग युद्ध करने में मूर्छित होने में या बेहोश होने में , तलवार चलाने में तथा साप का अभिनय दिखने में किया जाता है |

३. परिवर्ती ग्रीवा : अर्ध चन्द्र के रूप में दाहिने से बाये चलती हुई ग्रीवा को परिवर्ती ग्रीवा कहेते है |

   प्रयोग : इसका प्रयोग मिलन, स्नेह, प्रेम, लास्य नृत्य आदि में किया जाता है |

४. प्रकम्पिता ग्रीवा : कबूतर के कंठ के भांति आगे से पीछे तथा पीछे से आगे चलती हुई गर्दन को प्रकम्पित ग्रीवा कहते है |
   प्रयोग : इसका प्रयोग घोड़े की चाल बताने में किया जाता है |

   सुंदरी च तिरश्चीना तथैव परिवर्तिता |
   प्रकाम्पिता च भावज्ञ भावज्ञ ग्रीवा चर्तुर्विधा ||

Nritya Bharati - Jamnagar

(अभिनय दर्पण)

## ८. दृष्टिभेद के प्रकार

आचार्य नंदिकेश्वर जी ने अपने दर्पण नामक ग्रन्थ में दृष्टिभेद के आठ प्रकार बताये गए है १) समदृष्टि २) साची दृष्टी ३) प्रलोकित दृष्टी ४) आलोकित दृष्टी ५) निमीलित दृष्टी ६) उल्लोकित दृष्टी ७) अनुवृत्त दृष्टी ८) अवलोकित दृष्टी

१. समदृष्टि : साधारण रूप से बिना पलक झपकाए देखने को समदृष्टि कहेते है |

प्रयोग : इसका प्रयोग मूर्ति, आश्चर्य से देखने आदि में किया जाता है |

२. साची दृष्टी : आँख की पुतलियो को कोने की तरफ से जाकर देखने को साची दृष्टी कहेते है |

प्रयोग : इसका प्रयोग किनारे देखने, चोरी से देखने आदि में किया जाता है |

३. आलोकित दृष्टी : आँख की पुतलियो (eye ball) को चारो तरफ घुमाकर देखनेको आलोकित दृष्टी कहते है |

प्रयोग : इसका प्रयोग चारो तरफ देखना, मूर्छित होना, घुमती हुई वास्तु देखना आदि में किया जाता है |

४. प्रलोकित दृष्टी : दाहिने से बाए तथा बाये से दाहिनी और पुतलियों को चलते हुए देखनेको प्रलोकित दृष्टी कहेते है |
प्रयोग : इसका प्रयोग दोनों तरफ देखने, चालाकी दिखने,गतिमान वस्तु देखने आदि में किया जाता है |

५. निमीलित दृष्टी : जब पलके पूरी न खुली हो अर्थात अधखुली आँखों से देखने को निमीलित दृष्टी कहते है |

प्रयोग : इसका प्रयोग दिखाई न देने , प्रणाम करने, जप-तप, ध्यान व मूर्छित होने में किया जाता है |

६. अनुवृत्त दृष्टी : आँखों की पुतलियों को तेजी से ऊपर निचे चलने को अनुवृत्त दृष्टी कहेते है |

Nrtya Bharati - Jamnagar

प्रयोग : इसका प्रयोग ऊपर या निचे देखने , क्रोध आदि दिखाने में किया जाता है |

7. उल्लोकित दृष्टी : ऊपर की और देखने को उल्लोकित दृष्टी कहते है |

प्रयोग : इसका प्रयोग ऊँचे देखने, पक्षी , पेड़ , चन्द्रमा , आकाश , बादल इत्यादि में किया जाता है|

8. अवलोकित दृष्टी : निचे की और देखने को अवलोकित दृष्टी कहते है |

प्रयोग : इसका उपयोग संकोच, अपने अंगो को देखना,निचे की वस्तु देखने आदि में किया जाता है|

## परिभाषाए :

लय (तीनो प्रकार ) , मात्रा , सम, ताली, खाली, विभाग, तिहाई, ताल, आवर्तन, लहेरा, ठेका, ततकार , सलामी, ठाट,

<u>लय :</u> संगीत में व्यतीत (time used) समय की गति को “लय” कहते है | यह गति कभी तेज तो कभी धीमी होती है |

लय के तीन प्रकार होते है (१) विलंबित लय (Slow) (२) मध्य लय (midium) (३) द्रुत लय (fast)

विलंबित लय : जब लय की गति बहुत धीमी हो तो उसे विलंबित लय कहते है

मध्य लय : जब लय की गति न बहुत धीमी हो न बहुत तेज तो उसे मध्य लय कहते है

द्रुत लय : जब लय की गति बहुत तेज हो तो उसे द्रुत लय कहते है

<u>मात्रा :</u> संगीत में समय की सबसे छोटी इकाई को मात्रा कहते है , ताल में समय को नापने के लिए मात्रा का प्रयोग होता है |

<u>सम :</u> ताल की पहेली मात्रा को सम कहते है | किसी भी ताल में सम एक ही होता है | इसे ताल का घर भी कहा जाता है |

<u>ताली :</u> ताल में जब एक हाथ से दुसरे हाथ पर आघात किया जाता है तो उसे ताली कहते है |

<u>खाली :</u> किसी ताल का पढंत करते समय ताली न बजाकर हाथ को दूसरी तरफ ले जाकर विभाग का अंतर बताया जाता है तो उसे खाली कहते है |

<u>विभाग :</u> प्रत्येक विभाग में उसकी मात्राओं को कुछ हिस्सों में बात दिया जाता है जिसे विभाग कहते है |

Nritya Bharati - Jamnagar

तिहाई : कोई भी तालबद्ध छोटा टुकड़ा जब तीन बार प्रयोग करने पर सम पर आता है तब उसे तिहाई कहते है | तिहाई २ प्रकार की होती है १. दमदार २. बेदम

ताल : समय की गति को नापने का पैमाना ताल है | ताल को विभाग में व विभागों को मात्राओं में विभाजित किया जाता है |

आवर्तन : किसी ताल की समस्त मात्राओ का एक बार प्रयोग करना ही आवर्तन कहेलाता है |जब किसी भी ताल की पहली मात्रा से लेकर अंतिम मात्रा तक का एक चक्कर पूरा करके फिर पहेली मात्रा तक आते है तो इसे ताल का एक आवर्तन कहेते है |

लहेरा : लहेरा को नगमा भी कहते है | इसे संगत की दृष्टी से अपनाया गया है | यह भी एक आवर्तन का होता है | प्रत्येक ताल का अलग लहेरा अलग अलग रागों में बजाया जाता है | कत्थक नृत्य में सारंगी , हारमोनियम व वायोलिन द्वारा लहेरा बजाया जाता है |

ठेका : किसी भी ताल में तबले के मूल वर्णों को “ठेका” कहा जाता है |

ततकार : कत्थक नृत्य में ताल और लय के साथ पैर चलने की क्रिया को “ततकार” या “तथकार” कहा जाता है |

सलामी तोड़ा : “सलामी” फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है नमस्कार या प्रणाम करना | जब नर्तक कोई तोड़ा टुकड़ा नाच कर सम पर नमस्कार या सलाम करने का भाव दिखता है तो इस क्रिया को सलामी कहते है |

ठाट : कत्थक नृत्य प्रारंभ करने के तरीके को ठाट कहते है. इसमें छोटे छोटे मुखड़े टुकड़े तिहाई आदि लेकर नेत्र (eyes) भौ (eyebrows) गर्दन (neck) कलाई (wrist) आदि को लयबद्ध चलाते है . इन टुकडो मुखड़ो के अंत में कोई एक मुद्रा लेकर खड़ा होने को ठाट कहेते है ,

तोड़ा : केवल नृत्य के बोल (words) जैसे ता, थेई, तत , दिगदिग, तिग्धा, थून आदि से बने किसी भी तालबद्ध रचना जो एक आवर्तन से कम की ना हो उसे तोड़ा कहेते है .

NrityaBharati - Jamnagar